[redacted]

RNI N ..281/74 रजि. न. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 72 अंक : 22
सृष्टि संवत् 1960853116
30 अगस्त 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 22, 27/30 अगस्त 2015 तदनुसार 14 भाद्रपद सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तप की महिमा

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत।
-ऋ० ९।८३।१

शब्दार्थ-हे ब्रह्मणस्पते-तपोरक्षक प्रभो! **ते**-तेरा **पवित्रम्**-पवित्र नियम **विततम्**-सर्वत्र फैला हुआ है। **तू प्रभु**-सर्वसमर्थ **विश्वतः**-सब प्रकार से **गात्राणि**-शरीरों को **परि+एषि**-व्याप्त करता है। **अतप्ततनूः**-अतपस्वी शरीरवाला (कच्चे तन वाला) **आमः**-कच्चा मनुष्य **तत्**-उसको न नहीं **अश्नुते**-प्राप्त करता। **शृतासः**-पक्के **इत्**-ही **तत्**-उसे **वहन्तः**-धारण करते हुए **समाशत**-उत्तम रीति से भोग रहे हैं।

व्याख्या-भगवान् के पवित्र नियम सर्वत्र व्याप्त हैं। वह हमारे अङ्ग-अङ्ग में संग लगा हुआ है, किन्तु उसका दर्शन नहीं हो रहा, क्योंकि-'**अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते**' कच्चे तन वाला, कच्चा मनुष्य उस विस्तृत, सर्वत्र वितत पवित्रता को नहीं पा सकता। सुवर्ण तभी कुन्दन बनता है जब वह आग में तपाया जाता है। जो तप की भट्टी में तपाया नहीं गया, पकाया नहीं गया, वह कैसे उस रस को पाए ? कच्चे घड़े में पानी नहीं डाला जाता। पानी डालने के लिए उसे आवे में पकाना पड़ता है। इसी प्रकार आनन्द भरने के लिए शरीर को तपाना पड़ेगा। आत्मा-आत्म-आत्मा-कच्चे आत्मा को पक्का करना पड़ेगा, तभी इसमें ब्रह्मानन्द रस डाला जा सकेगा। तप की महिमा में वेद कहता है-

तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः। तपो ये चक्रिरे महस्ताँश्चिदेवापि गच्छतात्। -ऋ० १०।१५४।२

तप के कारण जो अनाधृष्य-किसी से न धमकाए जाने वाले हैं, तप के कारण जो आनन्द को प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने महान् तप किया है, भगवान् उन्हें प्राप्त होता है।

ये चित्पूर्व ऋतसाप ऋतावान ऋतावृधः। पितृन्तपस्वतो यम ताँश्चिदेवापि गच्छतात्। -ऋ० १०।१५४।४

जो भी ऋत से सम्बन्ध रखने वाले, ऋत का सत्कार करने वाले और ऋत को बढ़ाने वाले हैं, जो तपस्वी, ज्ञानी हैं, हे नियन्तः! तू उन्हें भी प्राप्त हो।

इस प्रकार तप की और भी बहुत महिमा वेद-शास्त्र में वर्णित की गई है, जो यथार्थ है। तपस्वी से सभी दबते हैं, कोई भी उसके सामने धृष्टता नहीं कर सकता। तप का अर्थ है ज्ञानपूर्वक कर्मों का अनुष्ठान।

तैतिरीयोपनिषत् [१।१] में लिखा है-

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः तप इतिह तपोनित्यः पौरुशिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपस्तद्धि तपः।।

ऋत और अध्ययनाध्यापन तप हैं। सत्य और सत्य का पढ़ना-पढ़ाना तप है। तप और तप का करना-कराना तप है। शम और शान्त रहना और रखना तप है। ज्ञानाग्नियां और जानना तथा ज्ञानदान तप है। सन्तान, सन्तान की उत्पत्ति तथ सन्तान में उत्कर्ष इन बातों का जानना-जतलाना तप है। सत्यवादी राथीतर के मत में सत्य ही तप है। तपः परायण पौरुशिष्टि तप को ही तप मानते हैं। मुद्गल के सन्तान नाक का कथन है कि स्वाध्याय-प्रवचन ही तप है। यही तप है, यही तप है।

सत्यवादी राथीतर का मत बताने से पूर्व ऋत आदि सभी तपों के साथ 'स्वाध्याय-प्रवचन' को भी लिया है और अन्त में फिर स्वाध्याय-प्रवचन को ही तप बताया है। इसका मर्म यह है कि स्वाध्याय और प्रवचन के बिना सभी तप अधूरे हैं, स्वाध्याय और प्रवचन से वे पूरे बनते हैं, अतः स्वाध्याय और प्रवचन मुख्य तप है। मनु जी का कहना है कि-जो नित्यप्रति स्वाध्याय करता है, वह नख से शिखा तक तप करता है। ज्ञान ही परम तप है, अतः जो तप की भट्ठी में-स्वाध्याय-प्रवचन की ज्वाला में जलकर किल्बिषशून्य हो गए हैं, वे 'शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत' पक्के होकर उसे धारते हुए उसे प्राप्त करते हैं। तप से अपने को उज्जवल, विमल, निर्मल बनाकर उसको आत्मसात् करने वाले ही उस आनन्द को प्राप्त करते हैं।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

महर्षि दयानन्द की वेद सम्बन्धी तीन मान्यताएं

-ले० दीनानाथ सिंह आर्य

युगपुरुष महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जबकि सम्पूर्ण देश अविद्या-अन्धकार एवं अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। संस्कृति विकृति को प्राप्त हो रही थी। देश सदियों से पराधीन था। यह कहना श्रेयस्कर होगा कि स्वराज्य स्थापना का प्रथम बीज ऋषिवर ने ही बोया।

हमारी संस्कृति पर औरंगजेबी तलवार की मार भी पड़ चुकी थी। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति तो विशेष विष बीज बो चुकी थी। हमारे धर्मग्रन्थ वेद के प्रति यह मान्यताएं तो बनी हुई थीं कि विश्व के पुस्तकालय में यह प्राचीनतम तथा अपौरुषेय ग्रन्थ हैं किन्तु मैक्समूलर ने इस बात का पर्याप्त ध्यान रखा कि वेद के अन्दर इतिहास आदि अवैज्ञानिक तथा अनर्गल तथ्यों को दिखाकर किसी प्रकार ईसाइयत का प्रचार किया जाए। दूसरे अर्थों में कैसे वेद के प्रति आर्यों की अनास्था जागृत करके उन्हें ईसाइयत की ओर आकर्षित किया जाए। इनके अतिरिक्त भी जिन आचार्यों ने (उव्वट, महीधर, सायण, ग्रिफिथ, मैकडोनाल्ड प्रभृति विद्वानों ने) वेद के भाष्य किए उन सभी ने वेद के सत्य अर्थ को प्रतिपादित करने के बजाए अपने-अपने पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर वेद में इतिहास, अश्लीलता आदि के आरोप लगाए।

महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महामानव अवतरित हुए जिन्होंने सर्वप्रथम वेद के सत्यार्थ को प्रकट किया। उन्होंने बताया कि वेद के अन्दर किसी प्रकार का इतिहास और अश्लीलता आदि नहीं है। वेद परमात्मा की अमरवाणी हैं 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:।। यजु. 2612 के अनुसार मानव मात्र के लिए हैं। वेद के शब्द यौगिक और आख्यातज हैं। ऋचाओं के सत्यार्थ के लिए निरुक्त, अष्टाध्यायी आदि व्याकरण ग्रन्थों की सहायता आवश्यक है। वेद में विभिन्न देवी-देवताओं या स्थानों का वर्णन नहीं है, वरन् मनुष्यों ने अपनी सुविधा या आवश्यकतानुसार वेद से ही नामों को लोक व्यवहार में ले लिया। इस प्रकार महर्षि ने एक क्रान्तिकारी मार्ग दिखाया। वे युग के प्रथम ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने विज्ञान को धर्म का एक अंग माना और तर्क व विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरने वाले को सत्य।

स्वामी दयानन्द ने वेद की अपौरुषेयता में कहा कि एकमात्र वेद की ही भाषा ऐसी है जो किसी देश या समुदाय विशेष की भाषा नहीं है, तथा संसार की सभी भाषाएं वेद से ही अपभ्रंश होकर बनी हैं। इसे सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं, क्योंकि भाषा के बनने का तो इतिहास नहीं मिलता, बिगड़ने का जरूर मिलता है। इस प्रकार भाषा की दृष्टि से वेद संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ हुए। (महर्षि कहते हैं कि यदि परमात्मा किसी देश या समुदाय विशेष में बोली जाने वाली भाषा में ज्ञान देता तो उसका पक्षपात सिद्ध होता।)

महर्षि की जो दूसरी प्रबल मान्यता वेद के प्रति रही वह यह कि वेद सनातन (नित्यनूतन) और स्वत: प्रमाण हैं। शेष सारे ग्रन्थ परत: प्रमाण हैं। वेद की किसी भी ऋचा को लें तो पाएंगे कि उसकी आवश्यकता जितनी पहले थी, उतनी ही अब भी है और समान रूप से सदा बनी रहेगी। सारे संसार के मानव मात्र के लिए वह उतनी ही उपयोगी है। उदाहरणार्थ-प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र को ही लें ''धियो यो न: प्रचोदयात्।'' परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्य की ओर प्रेरित करें। यह प्रार्थना समान रूप से सार्वकालिक, सार्वभौमिक, स्वत: सिद्ध है। क्योंकि कोई व्यक्ति चाहे सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग का हो, चाहे भारत, चीन, जापान, फ्रांस, रूस और अमेरिका, अरब आदि किसी भी देश का है अथवा हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त एवं वैष्णव आदि किसी सम्प्रदाय का हो, यही प्रार्थना करेगा। इसके विपरीत कोई यह नहीं चाहेगा कि मेरी बुद्धि बुरे मार्ग की ओर चले।

एक दूसरा मन्त्र भी लें- ''विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नआसुव।।''

ईश्वर हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर कर दे और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव तथा पदार्थ हैं वह हमको धारण कराएं। यह भी इसी प्रकार सनातन प्रार्थना हुई। साथ ही बाल, युवा, वृद्ध सभी के लिए है। क्योंकि जब हम बालक थे तब भी यही प्रार्थना करते थे। उस समय मेरे दुरित कुछ और प्रकार के थे। आज जब मैं युवा हूं, तो दुरित कुछ और प्रकार के हैं। जब वृद्ध हो जाऊंगा तब दुरित कुछ और प्रकार के होंगे। तो यह वेद की प्रार्थना सदा उपयोगी बनी रहेगी। इसी प्रकार किसी भी मन्त्र का चिन्तन करके हम उसे सदा सनातन ही पाएंगे। इसलिए वेद सनातन, स्वत: प्रमाण और अपौरुषेय सिद्ध होते हैं।

जहां तक बहु देवी-देवतावाद का सम्बन्ध है, वेद में बार-बार केवल एकेश्वरवाद की ही बात कही गई है।

यथा पतिरेक आसीत्। एक इत् राजा। अस्माकं अस्तु केवल:। एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। आदि अनेकानेक ऋचाएं एक ही ईश्वर का प्रतिपादन करती हैं। अनेक नाम परमात्मा के गुण विशेष को प्रदर्शित करने के लिए हैं, अर्थात् वे सब गौण नाम हैं। जैसे कोई व्यक्ति देवदत्त नाम का है। लोक व्यवहार में वह किसी का मामा, किसी का चाचा है, तो किसी का पिता, पुत्र और पति भी है। उसके अलग-अलग सम्बन्धी पृथक्-पृथक् सम्बन्ध सूचक नाम को ही पुकारेंगे तो उसका अर्थ यह नहीं हुआ कि देवदत्त अकेला व्यक्ति न होकर अनेक हैं। इसी प्रकार वेद के अंतर्गत परमात्मा के विभिन्न गुणों के सूचक ये नाम हैं न कि अनेक देवी-देवताओं के। साथ ही ये नाम ऐतिहासिक भी नहीं है क्योंकि इतिहास मानने पर उन्हें प्राचीनतम कैसे कहा जा सकेगा ? इतिहास तो तब होगा जबकि कोई व्यक्ति पैदा हो, कार्य करे और मृत्यु को प्राप्त हो। इसके पूर्व तो इतिहास बन ही नहीं सकता। जबकि वेद के अन्दर जिनका इतिहास बताया जाता है उन सभी ने तो वेद मन्त्रों को ही ध्याया है, तो इससे स्पष्ट है कि वेद उनके पूर्व थे न कि उनके बाद।

महर्षि ने एक अन्य भी भ्रान्ति को दूर किया कि वेद मन्त्रों के ऋषि मन्त्र रचयिता न होकर मन्त्र-द्रष्टा हैं (ऋषयो मन्त्र द्रष्टार:)। इसी प्रकार 'देवता' कोई अलग सत्ता न होकर उस मन्त्र का वर्णित विषय है।

महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों के ज्ञान, कर्म, उपासना तथा विज्ञान को क्रमश: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के प्रधान विषय बताकर वेद के सही रूप को समाज के सामने रखे। उनके द्वारा प्रदत्त इन मान्यताओं की विद्यमानता में अब किसी प्रकार के अनर्गल आरोप लगने असम्भव हो गए हैं। इस प्रकार महर्षि की वैदिक मान्यताओं में एकेश्वरवाद, जीव और प्रकृति तीन अलग तथा सनातन सत्ताएं, वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है-ये तीन प्रमुख हैं। हमको चाहिए कि महर्षि द्वारा प्रदर्शित सत्य मार्ग पर चलें। 'नान्य: पन्था विद्यतेयनाय' तथा परस्पर प्रेमपूर्वक 'संगच्छध्वं' की पवित्र भावना से रहें, चलें और कार्य करें।

सम्पादकीय.....

श्रावणी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व अवश्य मनाएं

पर्व हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। पर्वों के द्वारा हमें जीवन जीने का ढंग पता चलता है। पर्व हमें पूर्ण करते हैं, आनन्दित करते हैं और हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं। पर्व मनुष्य के जीवन में खुशियां लेकर आते हैं। श्रावणी, रक्षाबंधन तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्वों के साथ ही पर्व ऋतु का आगमन हो जाता है। श्रावणी और श्रीकृष्णजन्माष्टमी का पर्व दोनों हमारे लिए प्रेरणादायक हैं। श्रावणी पर्व एक ओर जहां हमें स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करता है वहीं पर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हमें महामानव श्रीकृष्ण के पद्चिह्नों पर चलने की प्रेरणा देता है। ऋषि दयानन्द मानते थे कि यदि धरती के लोग वेद को अपना लें और उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन बिताने लग जाएं तो उनके जीवन से सब प्रकार के दोष दूर हो जाएंगे, सब प्रकार के असत्य और झूठ, सब प्रकार के कपट और छल, सब प्रकार के वैर-विद्वेष, कलह और लड़ाई झगड़े, सब प्रकार के लोभ लालच, लूट-खसोट, चोरी-डाके और सब प्रकार की कुत्सित कामनाएं और वासनाएं परे भाग जाएंगी और वे परम पवित्र बन जाएंगे। सब लोग भाई-भाई की भांति प्रेम से मिलकर रहा करेंगे। कोई किसी के अधिकारों का हनन नहीं करेगा। संसार से लड़ाईयों और युद्धों की विभीषिका मिट जाएंगी। सर्वत्र शान्ति और प्रेम का साम्राज्य छा जाएगा। धरती स्वर्ग बन जाएगी और उस पर रहने वाले लोग देवता बन जाएंगे। सब लोगों के घरों में सुख-समृद्धि और आनन्द की गंगा बहने लगेगी। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है कि-

वेद सब विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

श्रावणी का पर्व हमें वेदाध्ययन के लिए प्रेरित करता है। अगर हम महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर तक पहुंचाना चाहते हैं तो अपनी-अपनी समाजों में वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं। वेद के विषय में महर्षि का जो मत है, जो विचार है उस विचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हमें वेद प्रचार को बढ़ावा देना होगा। श्रावणी के पर्व पर हम वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। वेद का अध्ययन हमें मानव बनाता है। महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करने के लिए हमें श्रावणी पर्व पर व्रत ग्रहण करना है। हम घर-घर में वेद तथा महर्षि दयानन्द के संदेश को फैलाएं। आर्य समाजों का लक्ष्य वेद प्रचार होना चाहिए। सभी समाजें श्रावणी पर्व पर लोगों को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित करें। वैदिक साहित्य लोगों में बांटे और उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा वेद प्रचार के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कई वर्षों से वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। सभा का उद्देश्य वेद का प्रचार करना है। साहित्य के पढ़ने से लोगों की बुद्धि जागृत होगी और वे वेद के महत्व को जानने लगेंगे। सभी समाजें इन दिनों में एक-एक सप्ताह का वेद प्रचार सप्ताह अवश्य मनाएं और लोगों को वेद के बारे में, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के बारे में जागरूक करें।

श्रावणी पर्व के एक सप्ताह के बाद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आता है। योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि- देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरूषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित्त मनमाने दोष लगाएं हैं। दूध-दहीं, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासलीला, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाएं हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत वाले न होते तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्रीकृष्ण योगी थे। परन्तु आज श्रीकृष्ण के स्वरूप को देखकर, लोगों के द्वारा उनका जन्मदिवस मनाने का ढंग देखकर सभ्य व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाता है। ऐसे योगीराज, महामानव, चरित्रनायक के जीवन के साथ वास्तव में अन्याय हुआ है। महापुरूषों के जीवन चरित्र में जितना अन्याय हिन्दु समाज ने श्रीकृष्ण के साथ किया है उतना अन्य किसी महापुरूष के साथ नहीं हुआ है। इसलिए जन्माष्टमी का पर्व मनाते हुए हम श्रीकृष्ण के शुद्ध और आप्त स्वरूप को जनता के समक्ष रखें।

29 अगस्त को श्रावणी पर्व और 5 सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आ रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि सभी आर्य बन्धु मिलकर इन दोनों पर्वों को बड़े उत्साह के साथ अपनी-अपनी समाजों और शिक्षण संस्थाओं में मनाएं। आम जनता तथा बच्चों को इन दोनों पर्वों का शुद्ध स्वरूप बताएं। आज श्रावणी का पर्व केवल रक्षाबन्धन तक सिमट कर रह गया है। लोगों को इस पर्व के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में बताएं और सभी को वेद तथा वैदिक साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करें। महाभारत में वर्णित श्रीकृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जन-जन तक फैलाएं। श्री कृष्ण के बारे में जन-सामान्य में जो भ्रान्तियां फैल गई हैं उन मिथ्या भ्रान्तियों से बच्चों तथा लोगों को अवगत कराएं। इस प्रकार का लक्ष्य लेकर यदि हम मिलकर चलेंगे तो अवश्य आर्य समाज और वैदिक संस्कृति का प्रचार होगा। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, भूले-भटके मनुष्य को सही राह दिखाना आर्य समाज का लक्ष्य है, महापुरूषों के शुद्ध स्वरूप को बताना हमारा परम धर्म है। पर्व हमारे जीवन में क्या संदेश लेकर आते हैं? पर्वों का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व आम जनता को बताएं। तभी पर्वों को मनाना सार्थक होता है। इसलिए आप सभी से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार का लक्ष्य लेकर हम सभी वेद प्रचार के कार्य में जुट जाएं और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

ईश्वर का मुख्य नाम-ओ३म्

ले० श्री यशपाल आर्य

संसार का प्रत्येक पदार्थ किसी न किसी नाम से ही जाना जाता है। इसीलिए लोक-व्यवहार की सिद्धि के लिए प्रत्येक पदार्थ का कुछ न कुछ नाम रचा जाता है। यदि ऐसा न किया जाए तो समाज का कार्य-व्यवहार चल ही नहीं सकता। इसी सिद्धान्त के अनुसार मानव-मात्र के उपास्य देव का भी कुछ न कुछ नाम होना ही चाहिए जिससे उसको पुकारा जा सके। फिर वह नाम ऐसा होना चाहिए जो उसके गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुरूप हो। तभी वह नाम सार्थक कहला सकता है। यदि वह उसका बोधक नहीं, तो वह नाम निरर्थक ही माना जाएगा।

हम सांसारिक पदार्थों एवं व्यक्तियों के नाम प्राय: गुण, कर्म, स्वभाव के विपरीत भी रख दिया करते हैं और कभी-कभी निरर्थक नाम भी रख दिया करते हैं। उदाहरणार्थ किसी निरक्षर का नाम विद्यासागर अथवा किसी निर्धन का नाम लक्ष्मी पति अथवा कुबेर नाथ रख दिया जाए। ईश्वर का वेद-प्रतिपादित ऐसा कोई भी नाम नहीं कि जो उसके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप एवं सार्थक न हो। यह ईश्वर के नामों की विशेषता है। दु:ख है कि आज का मानव ईश्वर को ही नहीं, उसके नाम को भी भूल चुका है। वह मनमाने नाम उस पर आरोपित कर रहा है। अभी वह घोर अन्धकार में ठोकरें खा रहा है, आवश्यकता इस बात की है कि हम ईश्वर के नामों, विशेषतया उसके निज नाम को जानें और उसकी महिमा को पहचानें।

पूर्व इसके कि हम ईश्वर के निज नाम की चर्चा करें, यह बता देना आवश्यक है कि ईश्वर के अनन्त नाम हैं। यह इसलिए कि ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव भी अनन्त हैं अत: उनके द्योतक नाम भी अनन्त ही हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने लोक-विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों को गिना कर लिखा कि-''इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं। क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं। उनमें से प्रत्येक गुण, कर्म, स्वभाव का एक-एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के बिन्दुवत् हैं क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव व्याख्यात किए हैं।'' वेद का कथन कि-''एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति'' अर्थात् एक ही ईश्वर को विद्वान् मेधावी जन बहुत नामों से पुकारते हैं।

ईश्वर के अनन्त नाम हैं, यह ठीक है, किन्तु उसका अपना कोई मुख्य अथवा निज नाम भी होना चाहिए। ईश्वर के कुछ नाम ऐसे भी हैं कि जो सांसारिक पदार्थों के भी द्योतक हैं। यथा अग्नि, वायु, इन्द्र, मित्र आदि। पर उसका एक नाम ऐसा भी तो होना ही चाहिए कि जिससे ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी का बोध न हो। उसी को हम मुख्य अथवा निज नाम कह सकते हैं। वेद नामी को नाम से पुकारने की बात कहता है। पर वह नाम कौन सा है ? योगदर्शन हमें ईश्वर का निज नाम बताता है, यथा ''तस्य वाचक: प्रणव:'' अर्थात् उसका वाचक प्रणव अर्थात् ओम है। सब वेदादि सत्य शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम ओम् ही बताया गया है। ईश्वर स्वयं अपना नाम उद्घोषित कर रहा है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय मंत्र 15 और 17 में तथा अध्याय 2 के मंत्र 13 में ऐसा सुस्पष्ट उल्लेख है। यथा ''ओ३म् खं ब्रह्म'' ''ओं प्रतिष्ठ''। कठोपनिषद् में आया है कि-''सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि-ओम् इत्येतत्।'' अर्थात् सारे वेद जिस पद का प्रतिपादन करते हैं, सारे तप साध्य रूप में जिस पद का वर्णन करते हैं, जिस पद की इच्छा से तपस्वी जन ब्रह्मचर्य धारण करते हैं, उस पद को मैं संक्षेप से कहता हूं, वह पद ओम् है।

ओम् नाम इसलिए प्रधान तथा सर्वोत्तम है क्योंकि इससे केवल परमेश्वर का ही बोध होता है, किसी अन्य का नहीं। जबकि अग्नि, इन्द्र आदि से प्रकरणानुसार ईश्वर और सांसारिक दोनों नामों का बोध होता है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का कथन है कि ओम् यह तो केवल परमात्मा का ही नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक हैं। तथा जो ईश्वर का ओंकार नाम है सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं उनमें ओंकार सबसे उत्तम हैं।' ओम् की महिमा का बखान करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में बड़ा ही सुन्दर वर्णन मिलता है कि वेदों को तपाया गया। उन तपाए हुओं से तीन शुक्र उत्पन्न हुए। ऋग्वेद से भू:, यजुर्वेद से भुव: और सामवेद से स्व:। फिर उन तीनों को तपाया गया, उन तपाए हुओं से तीन वर्ण उत्पन्न हुए, अकार, उकार और मकार। इन तीनों को इकट्ठा किया गया, तब 'ओम्' यह शब्द बना। यह ओम् नाम इसिलए भी सर्वोत्तम है कि इस एक नाम से ईश्वर के सभी नामों का बोध हो जाता है। इसमें महर्षि दयानन्द का निम्न वाक्य प्रमाण है। महर्षि लिखते हैं कि-जो अकार, उकार, मकार के योग से 'ओ३म्' यह अक्षर सिद्ध हुआ है, सो यह परमेश्वर के सब नामों से उत्तम नाम है, जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं। (देखे-पंचमहायज्ञ विधि)। इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि लिखते हैं कि-ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत से नाम आते हैं, जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि से मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञ नामों का वाचक और ग्राहक है। उसको ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानु-करण सब नाम परमेश्वर के ही हैं।

ईश्वर का यह ओ३म् नाम है, सर्वोत्कृष्ट हैं कि इसमें परमेश्वर के सभी गुणों का समावेश हुआ है। महर्षि कृत उपदेश मंजरी में इसका सुस्पष्ट उल्लेख है। यथा-ओ३म् यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योंकि इसमें उसके सब गुणों का समावेश है। ईश्वर के इस ओ३म् नाम जैसा पूर्ण तथा उत्तम नाम अन्य कोई नहीं। इस ओम् नाम के साथ किसी अन्य विशेषण लगाने की आवश्यकता नहीं रहती। क्योंकि इस एक नाम में ईश्वर के सभी विशेषण स्वत: ही समाविष्ट हैं। यही कारण है कि यह ईश्वर का अपना निज नाम है। हमें इसी नाम के स्मरण का आदेश वेद में मिलता है। यही नाम मानव को भवसागर तारने की दिव्य नौका है। यही नाम सब आधारों का आधार और पवित्र करने वाला है। इसी नाम के सहारे भवसिंधु तर सकते हैं।

स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 69वां स्वतन्त्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह की शुरूआत हवन यज्ञ से की गई। जिसमें आर्य वीर दल के सदस्यों ने भाग लिया। जिसमें स्कूल के बच्चे, अध्यापिकाएं श्रीमती विनोद गांधी जी व श्रीमती जनक रानी जी भी उपस्थित थे। हवन श्री योगराज जी शास्त्री ने करवाया। ध्वजारोहण की रस्म एम. एल. ए. श्री सुरिन्द्र डाबर जी ने अदा की। इसके पश्चात् स्कूल की छात्राओं ने गायत्री मंत्र से प्रोग्राम की शुरुआत की। इस समारोह के मुख्यातिथि श्री मनोज कुमार टोढी जी थे। ज्योति प्रज्जवलित श्री बृजेन्द्र भंडारी जी ने की। समारोह की शुरुआत से पहले ज़िला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने अपने भाषण से की। उन्होंने बच्चों को सभी अध्यापकों को व आए हुए सभी मेहमानों को 15 अगस्त की बधाई दी। इसके पश्चात् रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसमें सबसे पहले स्कूल के नन्हें मुन्ने बच्चों ने हाथ में तिरंगा व फौजियों की पोशाक में नन्हा-मुन्ना राही हूं देश का सिपाही हूं प्रस्तुत किया जिस पर खूब तालियां बजीं और पूरा हाल तालियों से गूंज उठा। फिर मेरा देश रंगीला और I Love My India पर बच्चों ने अपनी प्रस्तुति पेश की। फिर VI Class की स्नेहा ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर बहुत अच्छी स्पीच दी जिस पर सबने उसकी बहुत प्रशंसा की और खूब तालियां बजाई। फिर नौवीं कक्षा की विद्यार्थी तनवीर ने 15 अगस्त के बारे में इंग्लिश में अपनी स्पीच देकर सबका मन मोह लिया। फिर आई बारी सभी धर्मों को एक ही धर्म स्वीकार करने की जैसे कि सर्वधर्म पर आधारित तू ही राम, तू ही रहीम, मेरा कर्मा तू मेरा धर्मा तू पर अलग-अलग धर्मों की पोशाक पहन कर बच्चों ने सबका मन मोह लिया। रंगारंग कार्यक्रम के पश्चात् स्कूल के प्रधान श्री संत कुमार जी, मैम्बर श्री विजय सरीन जी व श्री बृजेन्द्र भंडारी जी ने स्वतन्त्रता दिवस पर अपने-अपने विचार प्रकट किए व सबको 15 अगस्त की बधाई दी। अन्त में स्कूल की प्रिंसीपल ने आए हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर मैनेजिंग कमेटी के मैम्बर अरुण सूद, वजीर चन्द, विजय सरीन, जनक रानी, शान्ति लाल, कृष्ण कुमार पासी, रमाकान्त महाजन, सुरिन्द्र टंडन, रमेश महाजन, हर्ष सचदेवा, ओम प्रकाश गुप्ता, गोपाल कृष्ण अग्रवाल व अजय बत्रा उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात् बच्चों को केक व बिस्कुट बांटे गए। आए हुए मेहमानों के लिए जलपान का अति उत्तम प्रबन्ध था। **-सुनीता मलिक**

मैं और मेरा आचार्य दयानन्द

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

देश व संसार में अनेक मत-मतान्तर हैं फिर हमें उनमें से ही किसी एक मत को चुनकर उसका अनुयायी बन जाना चाहिए था। यह वाक्य कहने व सुनने में तो अच्छा लगता है परन्तु यह ज्ञान मिलना आवश्यक है कि वह कौन है, कहां से आया है, मरने पर कहां जाता है, किन कारणों से उसे अपने माता-पिता से जन्म मिला, किसी धनिक के यहां जन्म क्यों नहीं हुआ, धनिक का निर्धन के यहां क्यों नहीं हुआ, किसने इस संसार को बनाया है और कौन इसका धारण, पोषण व संचालन करता है? संसार को बनाने वाली वह सत्ता कहां है, दिखाई क्यों नहीं देती, उसका नाम क्या है ? क्या किसी ने कभी उसको देखा है ? हम स्वयं अपनी मर्जी से पैदा नहीं हुए हैं, जिसने हमें उत्पन्न किया है, उसका हमें जन्म देने का उद्देश्य क्या था व है ? ऐसे अनेकानेक प्रश्नों के सही व समाधानकारण उत्तर जहां से प्राप्त हों व जिनसे जीवन का उद्देश्य जानकर उसकी प्राप्ति के सरल व समुचित साधनों का ज्ञान मिलता है, मनुष्य को उसी धर्म का धारण व पालन करना चाहिए। ऐसा न करके मनुष्य अपने जीवन का सदुपयोग नहीं करता और हो सकता है व होता है, वह सुदीर्घ काल, सैंकड़ों, हजारों व लाखों वर्ष तक नाना प्रकार के दुखों व निम्न से निम्न योनियों में जन्म हमने अपने मित्रों की प्रेरणा से पौराणिक परिवार में जन्म लेने पर भी आर्य समाज के सत्संगों में भाग लेना आरम्भ किया और उसके साहित्य मुख्यत: सत्यार्थ प्रकाश, पंच-महायज्ञविधि आदि का अध्ययन किया। वैदिक विद्वानों व सच्चे महात्माओं के प्रवचनों को सुनकर व साहित्य को पढ़कर हमारे उपर्युक्त सभी प्रश्नों व भ्रमों का समाधान हो गया जो अन्यथा नहीं हो सकता था। अत: हमारा कर्त्तव्य बनता था कि हमें जो सत्य ज्ञान मिला है, उससे हम अपने मित्रों व अन्यों को भी लाभान्वित करें। अत: इस कर्त्तव्य भावना से अधिकारी विद्वान न होने पर भी हमने अपना स्वाध्याय जारी रखा और लेखन के द्वारा अनेकानेक विभिन्न विषयों पर, जो-जो हमें सत्य प्रतीत हुआ, उसे लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया। आज हम अपने बारे में यह कह सकते हैं कि हम स्वयं से परिचित हैं। मैं कौन हूं, क्या हूं, कहां से आया हूं, कहां-कहां जा सकता हूं, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, उसकी प्राप्ति के साधन क्या हैं, यह संसार किससे बना और कौन इसे चला रहा है ? ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर मिला जिसका पूर्ण श्रेय मेरे आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती को है। संक्षेप में हम इन सभी प्रश्नों के उत्तर इस संक्षिप्त लेख में मैं जीवात्मा हूं जो कि एक चेतन तत्व है। चेतन होने के कारण ही मुझे सुख व दु:ख की अनुभूति होती है। मैं एकदेशी हूं अर्थात् व्यापक नहीं हूं। शास्त्रों ने जीवात्मा का परिमाण बताया है। यह अत्यन्त सूक्ष्म है। एक शास्त्रकार ने कहा है कि हमारे सिर के बाल का अग्रभाग लें, फिर उसके 100 टुकड़ें करें, फिर इन सौ में से एक टुकड़े के भी सौ टुकड़े करे, इसका एक टुकड़ा अर्थात् सिर के बाल के अग्रभाग का दस सहस्रवां टुकड़ा जीवात्मा के लगभग बराबर व उससे भी सूक्ष्म होगा। यह बात विचार, चिन्तन व गवेषणा से सत्य सिद्ध होती है। मैं अर्थात् जीवात्मा अनादि, नित्य, अजर, अमर, अविनाशी व सत्यासत्य का जानने वाला होता है परन्तु अविद्यादि कुछ दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। ज्ञान व कर्म जीवात्मा के दो लक्षण कहे जा सकते हैं। सृष्टिकाल में सभी जीवात्माओं को उनके पूर्व कर्मानुसार जन्म व भोग प्राप्त होते हैं। इस जन्म में हमें जो माता-पिता, संबंधी व अन्य परिस्थितियों, सुख-दु:ख आदि मिले हैं वह अधिकांशत: पूर्व जन्मों के कर्मों में फलों जिसे प्रारब्ध कहते हैं व इस जन्म के क्रियमाण कर्मों के कारण प्राप्त हुए हैं। हमें जन्म, सुख-दु:ख रूपी भोगों को देने वाली, वस्तुत: एक सत्ता ईश्वर है। ईश्वर ही सृष्टि को बनाने व धारण-पोषण अर्थात् संचालित करने वाली सत्ता है। ईश्वर परम धार्मिक है। वह सत्य, दया व करुणा से सराबोर है। उसके गुण, कर्म, स्वभाव सर्वदा समान रहते हैं, उनमें विपरीतता कभी नहीं आती। संसार में ईश्वर से इतर अत्यन्त सूक्ष्म मूल प्रकृति है, यह चेतन न होकर जड़ है। यह प्रकृति ईश्वर व जीव की ही तरह अनादि, नित्य, अविनाशी है तथा अत्यन्त सूक्ष्म, सत्व-रज-तम गुणों वाली है। यह ईश्वर के अधीन होती है। इसे सृष्टि का उपादान कारण कहते हैं। ईश्वर इस सृष्टि का निमित कारण है। इस प्रकृति को ही ईश्वर परिवर्तित कर वर्तमान सृष्टि अर्थात् नाना सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह, पृथिवी आदि का निर्माण सृष्टि काल के आरम्भ में करता है। इसी प्रकार के निर्माण वह इससे पूर्व के कल्पों में करता रहा है तथा इस कल्प के बाद के कल्पों में भी करेगा। यह सृष्टि 4 अरब 32 करोड़ वर्षों तक इसी प्रकार से विद्यमान रहती है। इस गणना का आरम्भ ईश्वर द्वारा सृष्टि का निर्माण करने के दिन से होता है। इसके बाद पुरानी हो जाने के कारण इसकी प्रलय अवस्था आती है जब यह छिन्न भिन्न होकर अपनी मूल अवस्था जो सत्व, रज व तम गुणों वाली अत्यन्त सूक्ष्म होती है, में परिवर्तित हो जाती है। यह प्रलयावस्था भी 4 अरब 32 करोड़ वर्षों तक रहती है, जो कि ईश्वर की रात्रि कहलाती है तथा जिसके पूरा होने पर ईश्वर पुन: सृष्टि बनाता है और प्रलय से पूर्व की जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार व प्रारब्ध के ईश्वर के बारे में यह जानना भी उचित होगा कि ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्द स्वरूप है। वह निराकार व सर्वव्यापक है। वह किसी एक स्थान, आसमान, समुद्र आदि में नहीं रहता अपितु सर्वव्यापक है। वह सर्वज्ञ अर्थात् सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान रखता है और सर्वशक्तिमान है। वह न्यायकारी व दयालु भी है। वह सनातन, नित्य, अनादि, अनुत्पन्न, अजर, अमर, अभय, नित्य व पवित्र है। वह सर्वव्यापक व अतिसूक्ष्म होने के कारण सब जीवात्माओं के भीतर भी विद्यमान व प्रविष्ट है। अत: जीवात्मा का कर्त्तव्य है कि वह स्वयं व ईश्वर के सत्य स्वरूप को जाने। यह सत्य स्वरूप हमने 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रन्थों से ही जाना है।

अन्य सभी ग्रन्थों व मत-मतान्तरों की पुस्तकों को पढ़ने से अनेक सन्देह उत्पन्न होते हैं जिनका वहां निवारण नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश में सभी बातें, मान्यताएं व सिद्धान्त महर्षि दयानन्द जी ने वेदों व वैदिक ग्रन्थों से लेकर मानवमात्र के हित व सुख के लिए सरल आर्यभाषा हिन्दी में वेद प्रमाण, युक्ति, व प्रमाणों आदि सहित प्रस्तुत की हैं। यदि वह यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखते तो फिर हम संस्कृत न जानने के कारण उससे लाभान्वित न हो पाते और तब हम अज्ञानी ही रहते और मत-मतान्तरों का अपना कारोबार यथापूर्व चलता रहता। हमारा कर्त्तव्य है हम ईश्वर को जानकर उसकी उपासना करें। यद्यपि ईश्वर हमारी आत्मा में व्यापक है, अत: उपासना अर्थात् व हमारे निकट तो सदा से है परन्तु उपासना में ईश्वर की स्तुति व प्रार्थना भी सम्मिलित हैं। यह स्तुति, प्रार्थना व उपासना ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन ही है जैसे कि किसी से उपकृत होने पर हम धन्यवाद करते हैं। उपासना करने से हमारे गुण-कर्म-स्वभाव सुधर कर ईश्वर के गुणों के अनुरूप यथासम्भव हो जाते हैं। ईश्वर ने हमारे लिए यह विशाल संसार बनाया, इसे चला रहा है, इसमें हमारे सुख के लिए नाना प्रकार की भोग सामग्री बनाई है और हमें मानव जन्म व माता-पिता-बन्धु-बान्धव-इष्टमित्र-आचार्य-ऋषि आदि प्रदान किए हैं। (शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-मैं और मेरा.....

अत: कृतज्ञता ज्ञापन करना हमारा कर्त्तव्य है अन्यथा हम कृतघ्न होंगे। यदि हम किसी की कोई सहायता करते हैं तो हम भी चाहते हैं कि वह हमारे प्रति कृतज्ञता का भाव रखे। इस भावना की अभिव्यक्ति का नाम ही उपासना है जिसमें स्तुति व प्रार्थना भी सम्मिलित हैं। नियमित व यथार्थ विधि से उपासना करने से ही ईश्वर का जीवात्मा में साक्षात्कार भी होता है। यह अतिरिक्त फल उपासना का होता है। ईश्वर साक्षात्कार की अवस्था के बाद जीवन मुक्ति का काल होता है जिसमें मनुष्य उपकार के कार्यों को करता हुआ कर्मों के बन्धन में नहीं फंसता और मृत्यु आने पर जन्म मरण से मुक्त होकर ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति करके ईश्वर के सान्निध्य से आनन्द का भोग करता है। यही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है जो सच्चे ईश्वर को जानकर उपासना करने से प्राप्त होता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ही हमारा जन्म हुआ है। सृष्टि के आरम्भ से सभी ऋषि-मुनि व विद्वान इस पथ पर चले हैं और हमें भी उनका अनुकरण व अनुसरण करना है। इस पथ पर चलने के लिए महर्षि दयानन्द की शिक्षा है कि हमारे सभी कार्य व व्यवहार सत्य पर आधारित होने चाहिए। वह सत्याचार को ही मनुष्यों का यथार्थ व अनिवार्य धर्म ईश्वर, जीव व प्रकृति विषय यह समस्त ज्ञान सृष्टि क्रम के अनुकूल व साध्य कोटि का है और वेदों व ऋषि मुनियों के जीवन व उनके सत्य उपदेशों से प्रमाणित है। इसके विपरीत ज्ञान व क्रियाएं अज्ञान व मिथ्याचार हैं। यह ज्ञान मुझे मेरे आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्राप्त हुआ है। महर्षि दयानन्द का जन्म गुजराज के राजकोट ज़िले के एक कस्बे टंकारा में पिता श्री कर्षन जी तिवारी के यहां 12 फरवरी, सन् 1825 को हुआ था। 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि के दिन उन्होंने पिता के कहने से कुल परम्परा के अनुसार शिवरात्रि का व्रत किया था। देर रात्रि शिवलिंग पर चूहों को उछलते-कूदते देखकर उन्हें मूर्तिपूजा की असारता व मिथ्या होने का ज्ञान हुआ था। कुछ काल बाद उनकी एक बहन व चाचा की मृत्यु होने पर उन्हें वैराग्य हो गया था। 21 वर्ष तक उन्होंने माता-पिता के पास रहते हुए संस्कृत, यजुर्वेद व अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किया था। 22 वर्ष की अवस्था में वह सच्चे ईश्वर व मुक्ति के उपायों की खोज व उनके पालन के लिए गृहत्याग कर देशभर में विद्वानों, साधु-सन्यासियों, योगियों के सम्पर्क में आएं। मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द से उन्होंने आर्ष संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरुक्त पद्धति से अध्ययन कर सन् 1863 में गुरू की आज्ञा से संसार से धार्मिक व सामाजिक क्रान्ति सहित समग्र, अज्ञान व अन्धकार दूर करने के लिए कार्य क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। उन्होंने मौखिक प्रवचन, उपदेश, व्याख्यान, शास्त्रार्थ, शंका समाधान, ग्रन्थ लेखन द्वारा देश भर में घूम-घूम कर प्रचार किया। प्रचार के निमित्त ही उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य संस्कृत व हिन्दी में, पंचमहा-यज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणा-निधि आदि अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन किया। नवम्बर, 1869 में उन्होंने काशी के 30 से अधिक शीर्षस्थ सनातनी विद्वानों से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया था। मूर्तिपूजा वेद सम्मत सिद्ध नहीं हो सकी थी न ही आज तक हो पाई है। उनके अनेक विरोधियों ने उन्हें जीवन में अनेक बार विष दिया। ऐसी ही विष देने की एक घटना जोधपुर में घटी। स्वामी जगदीश्वरा-नन्द सरस्वती के अनुसार इस षडयन्त्र में अंग्रेज सरकार भी सम्मिलित रही हो सकती है। इसके परिणामस्वरूप 30 अक्तूबर, 1883 को दीपावली के दिन अजमेर में उनका देहावसान हो गया। उन्होंने जिस प्रकार से अपने प्राण त्यागे उससे लगता है कि यह कार्य उन्होंने शरीर के जीर्ण होने पर ईश्वर की प्रेरणा से स्वत: किया। स्वामी जी ने अज्ञान, अंधविश्वासों का खण्डन किया, सामाजिक विषमता को दूर किया, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार दिया, विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार तथा समाज से सामाजिक विषमता और अस्पृश्यता को समाप्त किया। लोगों को ईश्वर व जीवात्मा का ज्ञान कराकर सच्ची ईश्वर भक्ति सिखाई और जीवन मुक्ति के लिए मृत्यु व मोक्ष के सत्य स्वरूप का प्रचार किया। देश की आजादी भी उनके प्रेरणाप्रद विचारों व आर्य समाज के सदस्यों व अनुयायियों के पुरुषार्थ की देन है। मेरे आचार्य दयानन्द मेरे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार के आचार्य हैं। उन्होंने अज्ञानान्धकार में डूबे विश्व को सत्य ज्ञान रूपी अमृत औषधि का पान कराया और उसे मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा की। मैं अपने आचार्य का कोटि-कोटि ऋणी हूं। संसार के सभी लोग भी उनके ऋणी हैं परन्तु अपनी अविद्या, अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ व दुराग्रह आदि कारणों से उससे लाभ नहीं पा रहे हैं। संसार के प्रत्येक मनुष्य को महर्षि दयानन्द रचित साहित्य का अध्ययन कर, मत-मतान्तरों व अज्ञानी धर्मगुरुओं के चक्र में न फंस कर, अपने जीवन को सफल करना चाहिए। ईश्वर सबको सदबुद्धि प्रदान करे।

वेद-ज्ञान की प्रासंगिकता पर विस्तार-भाषण आयोजन

11.8.15 को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में हिन्दी एवं संस्कृत विभाग द्वारा विस्तार-भाषण का आयोजन किया गया। डा. सुशील बाला, एसोसिएट प्रोफैसर हिन्दी एवं मैडम श्रीमती अंजना रतूड़ी, प्रवक्ता संस्कृत विभाग के नेतृत्व में 'वेद-ज्ञान की शास्वत् प्रासंगिकता' विषय पर करवाए गए विस्तार-भाषण के विद्वान वक्ता रहे। श्री प्रशांत शोरी एवं श्रीमती निवेदिता शोरी। उनके महाविद्यालय में पधारने पर कॉलेज प्राचार्य डॉ. नीलम शर्मा, एल. बी. एस. सीनियर सैकण्डरी कॉलजिएट स्कूल प्रधानाचार्य श्रीमती रंजना मैनन, प्रबंधक समिति के प्रधान डॉ. सूर्यकांत शोरी ने भावभीनी स्वागत किया।

श्री प्रशांत शोरी ने वेदों की हर युग में प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त करते हुए अपनी रोचक एवं संवादात्मक शैली से श्रोताओं को बांधे रखा। उन्होंने ऋग्वेद की उक्ति 'मनुष्य बनो' के भाव को सारगर्भित ढंग से व्याख्यायित किया। उन्होंने जीवन से संबंधित अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर अपने तथ्यों को सिद्ध किया। श्री प्रशांत शोरी ने कहा कि वेद किसी धर्म विशेष से संबंधित नहीं है अपितु ये तो समस्त मानवता को धर्माचरण द्वारा स्वस्थ, सकारात्मक एवं सुखी जीवन जीने की कला सिखाते हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने सहनशीलता, क्षमा, स्व-नियन्त्रण, चोरी न करना अर्थात् आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना, शौच (आंतरिक एवं बाह्य), इन्द्रिय-निग्रह, सद्बुद्धि, विद्या, सत्य-वरण व क्रोध न करने को उद्धृत किया।

श्रीमती निवेदिता शोरी ने भी दैनिक जीवनचर्या में वेदों, वेद मंत्रों की प्रासंगिकता को सरल शैली में उदघाटित किया। उनका कथन था कि ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रति आस्था संसार को विकृतिमुक्त कर सकती है। उन्होंने मानव जीवन एवं व्यक्तित्व विकास के विभिन्न कारक तत्त्वों को भी उद्घाटित किया। श्रीमती निवेदिता शोरी ने जीवन की सार्थकता में भूमिका अभिनीत करने वाले श्रवण मनन-चिंतन, साक्षात्कार को व्याख्यायित करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में इन्हें अपनाने का भी संदेश दिया। शोरी दंपत्ति ने अपने मधुर भजनों से वातावरण को संगीतमय कर दिया। श्री प्रशांत शोरी ने चारित्रिक आदर्शों का वरण करने और मानवता के कल्याण के मूलाधार अध्यात्म की भावाभि-व्यक्ति अपने भजनों में की और श्रीमती निवेदिता शोरी ने शरणदाता ईश्वर के प्रति समर्पण भाव को अपने भजन में अभिव्यक्त किया। कॉलेज प्रबन्धक समिति के वरिष्ठ उपप्रधान श्री केवल जिंदल, प्राचार्या डॉ. नीलम शर्मा, कालजिएट स्कूल प्रधानाचार्य श्रीमती रंजना मैनन ने शोरी दंपत्ति को संस्था की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया। मंच संचालन हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफैसर डॉ. सुशील बाला ने कुशलतापूर्वक किया।

कॉलेज प्रबन्धक समिति के प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री केवल जिंदल, सदस्य श्री बसंत शोरी, श्रीमती शैलजा शोरी के अतिरिक्त कॉलेज, उप-प्राचार्या व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष मैडम मनीषा भारद्वाज, वरिष्ठ प्रवक्ता व राजनीति शास्त्र विभागाध्यक्ष श्रीमती अनिता सिंघल, वरिष्ठ प्रवक्ता व पंजाबी विभागाध्यक्ष श्रीमती शारदा अत्रि, इतिहास विभागाध्यक्ष मैडम अर्चना, मैडम डा. जसविंदर कौर, मैडम किरणपाल कौर, मैडम मोनिका बांसल, मैडम मनदीप कौर, श्री सोनी चुघ, श्री हरदीप सिंह, स्कूल स्टॉफ में मैडम किरण सीकरी, मैडम सर्बजीत कौर, मैडम कर्मजीत कौर आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मनुष्य का ध्येय परमात्मा प्राप्ति

ले० श्री रमेश कुमार शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज, मुहल्ला गोविन्दगढ़, जालन्धर

मनुष्य अपने ज्ञान एवं कर्मों से बड़ा बनता है। मनुष्य को सत्य मार्ग पर चलते हुए, पुण्य कर्मों को करते हुए, केवल यही ध्येय होना चाहिए कि वह परमात्मा को प्राप्त करें। परमात्मा की उपासना करते हुए, उसके सान्निध्य को प्राप्त करें। मनुष्य चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, कितना भी महान योद्धा ही क्यों न हो, चाहे उसने कितने ही योद्धाओं को क्यों न हराया हो परन्तु वह अगर यह कहें कि मैं एक म्यान में दो तलवारें रखूंगा तो यह बात असम्भव है क्योंकि एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है। इस सत्य को सभी जानते हैं। ठीक इसी प्रकार अगर परमपिता परमात्मा को पाना है, अथवा प्राप्त करना है तो हमें भी अपने भीतर हृदय रूपी म्यान में भी सत्य अथवा ईश्वर की ओर जाने वाले मार्ग रूपी तलवार का ही सहारा लेना चाहिए और प्रभु की उपासना करते हुए हमें अपने भीतर के काम, क्रोध, मद, मोह, लोभादि छः शत्रुओं को अपने से बाहर करना है क्योंकि इन शत्रुओं में से अगर एक भी शत्रु अथवा बुराई विद्यमान है तो हमें प्रभु दर्शन नहीं हो सकते। प्रभु प्राप्ति के लिए हमें इन सबका परित्याग अत्यावश्यक है। ये सभी बुराईयां मनुष्यों में धीरे-धीरे प्रवेश करती है। प्रारम्भ में मनुष्य अज्ञान के वशीभूत होकर इनके उपभोग से मिलने वाले सुख में ही आनन्द प्राप्त करता है। धीरे-धीरे यह सुख-दुःख के रूप में परिवर्तित हो जाता है। तब मनुष्य अज्ञानवश इसी को अपने जीवन का ध्येय समझ लेता है। इन भोग्य पदार्थों से हमें क्षणिक सुख तो मिल सकता है। आज है कल नहीं रहता। ऐसे क्षणिक सुख को पाने से क्या लाभ। ज्ञानी प्रभु भक्त लोग इहलोक और परलोक के सुख का अनुभव करते हैं। ज्ञानी महात्माओं की यही इच्छा होती है कि हमें सांसारिक सुख मिले या न मिले परन्तु आत्मिक सुख को वे प्राप्त करते हैं। साधारण मनुष्य काम क्रोधादि शत्रुओं के वशीभूत होकर अपने लक्ष्य अथवा ध्येय को भूल जाता है। हमारा लक्ष्य केवल प्रभु प्राप्ति है। यह बात हमें हमेशा गांठ बांध लेनी चाहिए। एक बार एक सन्त ने अपने शिष्य से कहा कि क्या तुम प्रभु प्राप्ति करना चाहते हो तो मैं तुम्हें प्रभु दर्शन करवा सकता हूं। शिष्य ने कहा अवश्य ही मुझे प्रभु दर्शन करने हैं। मुझे क्या करना होगा जिससे कि प्रभु दर्शन हो। गुरु ने कहा अमुक पहाड़ी में परमात्मा का वास है अतः हमें उस पहाड़ी पर जाना होगा। शिष्य ने कहा ठीक है मैं चलने को तैयार हूं। गुरु ने कहा वह पहाड़ी बहुत दूर है। हमें कई दिन पदयात्रा करनी पड़ेगी। अतः दोनों अपना-अपना सामान लेकर पहाड़ी की ओर चल दिए। कुछ समय पश्चात् गुरु ने शिष्य को छः पत्थर के टुकड़े दिए और कहा कि इन्हें भी साथ ले चलो। गुरू की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए मार्ग पर चल दिए। वे पत्थर के टुकड़े काफी भारी भी थे। पहाड़ों का रास्ता बहुत ही कठिन होता है और सामान भी साथ हो तो चलना और भी कठिन हो जाता है। कुछ समय बाद जब शिष्य थक गया। उसने गुरु से कहा कि गुरु जी क्या में पत्थर के एक टुकड़े को गिरा दूं। मैं थक गया हूं। गुरु ने कहा ठीक है गिरा दो। उसने एक टुकड़ा गिरा दिया। कुछ दूरी तय करने के पश्चात् उसने फिर एक ओर पत्थर को गिराने के लिए कहा। गुरु ने फिर कहा कि गिरा दो। इसी तरह धीरे-धीरे उसने सारे पत्थरों को गिरा दिया। जिससे उसका बोझ कम हो गया। अन्त में वह दोनों उस पहाड़ी पर जा पहुंचे तभी शिष्य इधर-उधर चारों तरफ देख कर बोला कि गुरु जी कहां है प्रभु, प्रभु तो दिखाई नहीं दे रहा। हम दोनों के सिवाएं यहां पर तीसरा कोई नहीं है। आपने तो कहा था कि यहां प्रभु का वास है परन्तु यहां तो कोई नहीं है। तभी गुरु ने कहा जिस प्रकार तूने उन पत्थर के टुकड़ों को एक-एक करके गिराया। इसी प्रकार काम, क्रोधादि पत्थर रूपी भार को जब तक हम नहीं त्यागते तब तक हमें प्रभु प्राप्ति नहीं होती। जिस व्यक्ति का हृदय, स्वार्थ, हिंसा, द्वेष, ईर्ष्या, अज्ञानादि से युक्त है उसे प्रभु प्राप्ति नहीं हो सकती।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को परोपकार में लगा रखा है। वही प्रभु का प्रिय भक्त है और श्रद्धा से परमात्मा की उपासना करने वाले व्यक्ति को परमात्मा प्राप्त हो जाता है। यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति कितना धनवान् क्यों न हो, चाहे प्रधानमन्त्री हो, मुख्यमन्त्री हो, कितना ही बड़ा स्पैशलिस्ट सर्जन ही क्यों न हो, चाहे वह किसी बड़े विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में पढ़कर कितनी भी बड़ी डिग्री क्यों न प्राप्त कर रखी हो। अगर इन सब में काम, क्रोधादि शत्रु विद्यमान हैं, उन्हें प्रभु के दर्शन नहीं हो सकते। अगर प्रभु दर्शन करना है तो इन सबका परित्याग आवश्यक है। सभी प्रकार की उच्च-से-उच्च डिग्री से हमें अच्छी से अच्छी नौकरी, बड़े-से बड़ा पद, अधिक-से-अधिक धन तो मिल सकता परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हो सकता। प्रभु दर्शन के लिए न तो अधिक धन, न उच्च पद की, न उच्च शिक्षा और न उच्च जाति की। परमात्मा की प्राप्ति तो सद्गुणों से, अपने जीवन को परहित में लगाने से, स्वाध्याय से, वेद के मार्ग को अपनाने से होती है। अतः अन्त में मैं यही कहूंगा कि हम सभी का जो ध्येय या लक्ष्य है। उसे कभी न भूले। परमात्मा को हमेशा याद रखे। क्योंकि प्रभु को याद करने से हमें शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की शक्ति मिलती है। जिस शक्ति को प्राप्त करके हममें कभी भी कोई भी बुराई अधिक देर तक नहीं ठहर सकती। अगर बुराई पर विजय पानी है तो परमात्मा को न भूलें।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में भजन संध्या

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 16 अगस्त 2015 रविवार को सायं 4 बजे से साढ़े 6 बजे तक भजन संध्या का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पवित्र यज्ञ से हुआ जिसे आर्य समाज के पुरोहित पं.बालकृष्ण जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। यजमान अभय, कुमारी मनस्वी पुरी तथा अन्य महानुभावों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां अर्पित कीं। यज्ञ के पश्चात का कार्यक्रम आर्य समाज के सभागार में हुआ। जिसका संचालन आर्य समाज के महामंत्री श्री अनिल कुमार जी ने किया। पंजाब के प्रसिद्ध भजन गायक श्री सुरिन्द्र जी गुलशन का आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में पधारने पर सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत एवं अभिनंदन किया। श्री गुलशन जी ने अपने भजनों की कड़ी प्रभु भक्ति के भजन महिमा ऊंची ओ३म नाम की, ओ३म नाम गुण गाओ जी से आरम्भ की तथा दो और प्रभु भक्ति के भजन प्रस्तुत करने के बाद पंजाबी में वैराग्य के गीत दीवे दी लौ बांगू जिन्दगी दा खेल है तथा दुनिया वालो तुझे बताए यह जगवासा लकड़ी का सुनाए।

कार्यक्रम में वेदोपदेश करते हुये पं. बाल कृष्ण जी शास्त्री जी ने बतलाया कि संकल्प बल के जागृत हो जाने पर सारे मार्ग अपने आप खुल जाते हैं। उन्होंने महर्षि दयानन्द का उदाहरण देते हुये कहा कि गुरु विरजानंद के समक्ष सच्चे वेद ज्ञान के प्रचार और प्रसार का जो संकल्प उन्होंने लिया वह जीवन में पूर्ण करके दिखलाया। इसी प्रकार गुरुदत्त विद्यार्थी ने आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिये संकल्प लिया और अपने अल्प जीवन के अंदर यह कठिन कार्य कर दिखाया।

गुलशन जी के भजनों के दूसरे चरण में उन्होंने प्यार नहीं है सुर से जिस को पत्थर है इंसान नहीं वो, मैं कौन हूं, मैं कौन हूं, यही जानने आया हूं। तुझे भूला ही नहीं, फिर याद क्यूं करूं के गीत सुनाने के बाद राष्ट्र भक्ति के गीत सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। दम निकले इस देश की खातिर बस इतना अरमान है, मेरा रंग दे बसन्ती चोला तथा जो शहीद हुये हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी सब ने मिल कर गाकर शहीदों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस कार्यक्रम में लुधियाना की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, जिला आर्य सभा, आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य पुरोहित सभा, आर्य वीर दल के अधिकारी व सदस्य तथा आर्य समाज समराला, साहनेवाल के सदस्यों के साथ साथ नगर के गणमान्य व्यक्ति बहुसंख्या में सम्मिलित हुये।

कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान श्री विजय सरीन ने परमपिता परमात्मा का धन्यवाद के उपरान्त सभी विद्वानों का तथा आर्य जनता का धन्यवाद किया। शांति पाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सर्वश्री बृज मोहन अरोडा, बृजेश पुरी, ओम प्रकाश गुप्ता, अजय मोंगा, संजीव गुप्ता, राजीव गुप्ता, राजेन्द्र बेरी, श्रीमती अनु गुप्ता, एवं ममता शर्मा का विशेष सहयोग रहा।

-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज

वेदवाणी

प्रभु भक्त को कौन मार सकता है ?

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे।
प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ॥

-ऋ० १/९१/६

विनय-हे हृदयेश ! हे देव ! हे सोम ! जब तुम्हारी इच्छा हमें जीवित रखने की है तब हमें कोई मार नहीं सकता। यह अन्धा, अज्ञानी संसार बहुत बार तेरे भक्तों से द्वेष करने लगता है, उन्हें सताता है और उन्हें मारना तक चाहता है। भक्त प्रह्लाद को मारने की कितनी चेष्टाएं की गईं। भक्त मीरा की जान लेने के लिए राजा ने कई बार यत्न किया, भक्त दयानन्द को लोगों ने कई बार ज़हर दिया, परन्तु तेरी इच्छा बिना कौन मर सकता है? भक्त लोग इस तत्त्व को जानते होते हैं, अतः वे आनन्दित रहते हैं। मरने से डरने वाला यह संसार तेरे ईश्वरत्व को न जानने वाला यह संसारस्यूं ही भय-त्रास और मरणाशंका से मरा जाता है, परन्तु भक्त देखते हैं कि जब तक तेरी इच्छा नहीं है तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता, और जब तेरी इच्छा होगी तब तो मरना भी उनके लिए उतना ही आनन्ददायक होगा जितना कि तेरी इच्छा से जीना आनन्ददायक है। अहो, इस ज्ञान के कारण वे भक्त जीवित ही अमर हो जाते हैं, अभिनिवेश के क्लेश से पार हो जाते हैं। वे संसार की किसी भयंकर से भयंकर वस्तु से भी न डरते हुए, तेरे स्त्रोत गाते हुए निर्भय फिरते हैं। प्यार स्तोत्रों से तुझे रिझाना या तेरे स्तुतिगान से जगत् में भक्ति का प्रसार करना, यही उनका कार्य होता है। अपनी रक्षा व अरक्षा की चिन्ता वे तुझ पर छोड़ निश्चिन्त हो जाते हैं। तू तो सम्भव जन करने वालों की रक्षा करने वाला विद्यमान है ही, तो उन्हें क्या चिन्ता ? अहा! कैसी निश्चिन्तता और निरापदता की अवस्था है। अमृत्युता (अमरता) का कैसा आनन्द है।

-वैदिक विनय से साभार

आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी नहीं रहे

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के साप्ताहिक सत्संग दिनांक 9.8.15 दिन रविवार में आर्य जगत के सुविख्यात सन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आर्य समाज के मन्त्री श्री सुरेन्द्र टंडन ने स्वामी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए स्वामी जी को आर्य समाज का कुशल नेतृत्व करने वाला त्यागी और तपस्वी बताया। आर्य समाज के पुरोहित कर्मवीर शास्त्री ने स्वामी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए त्यागी और तपस्वी धर्मनिष्ठ वेदनिष्ठ बताकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी का जीवन राष्ट्र और समाज के लिए प्रेरणा पद रहा। स्वामी जी आर्य समाज के अनेक उच्च पदों पर रहे। आर्य समाज के कुशल नेतृत्व कर ऋषि के मिशन को उच्च स्थान प्राप्त कराया। श्री सन्त कुमार पूर्व प्रधान आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार में भी स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री संजीव चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज में एक उद्भट् विद्वान और नेता खो दिया। जिसकी पूर्ति होना असम्भव होगा। सभी सदस्यों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण कर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।